

# फिंगर पपेट्स और रनिंग ब्लैकबोर्ड से सीखने का सुदृढीकरण

साई प्रवीण महीरला

**आँ** गनवाड़ियों में शिक्षिकाएँ विभिन्न गतिविधियों जैसे चर्चाओं, कहानियों, कविताओं, नाट्य और रचनात्मक व संज्ञानात्मक गतिविधियों के ज़रिए बच्चों को सीखने के अवसर मुहैया कराती हैं। इन गतिविधियों के ज़रिए बच्चे विभिन्न महत्वपूर्ण अवधारणाओं को सीखते हैं। सीखना एक सतत प्रक्रिया है, इसलिए इसका सुदृढीकरण करने के लिए रोचक तरीके अपनाए जाने चाहिए। इस लेख में मैंने यह बताया है कि बच्चों में विभिन्न अवधारणाओं और विषयों के सीखने को सुदृढ करने के लिए मैं फिंगर पपेट्स और रनिंग ब्लैकबोर्ड का किस तरह इस्तेमाल करता हूँ।

इसमें कोई शक नहीं है कि शिक्षण-अधिगम सामग्री (टीएलएम) बहुत प्रभावी साधन होते हैं, जो नई अवधारणाओं को समझाने में शिक्षकों की मदद करते हैं और साथ ही इनसे सीखना भी सुदृढ होता है। इसके अलावा, टीएलएम बच्चों को किसी भी गतिविधि में लम्बे समय तक रत रहने में भी मददगार होते हैं।

चेहरे के हाव-भाव और आवाज़ के उतार-चढ़ाव के साथ कहानी सुनाने से बच्चों को कहानी के किरदारों और कथानक को समझने में मदद मिलती है। कहानी सुनाने के बाद उस कहानी से मिले सबक को ही और सुदृढ करने के लिए फिंगर पपेट्स का इस्तेमाल किया जा सकता है। यहाँ वह प्रक्रिया बताई जा रही है जो मैं अपनाता हूँ।

## फिंगर पपेट्स का इस्तेमाल

मैं बच्चों के साथ एक गोल घेरे में बैठता हूँ ताकि हम सब एक-दूसरे को देख सकें। कहानी में इस्तेमाल होने वाले फिंगर पपेट्स को मैं अपने थैले में रखता हूँ। बच्चों को आँख बन्द करके बैठने के लिए कहता हूँ। फिर, तीन तक की गिनती गिनकर मैं उन्हें आँख खोलने के लिए कहता हूँ। तीन की गिनती के बाद जब वे आँख खोलते हैं तो मैं 'टट्टाट्टुई' जैसी कोई दिलचस्प आवाज़ निकालते हुए थैले से एक फिंगर पपेट बाहर निकालता हूँ।

मेरी उँगली पर चढ़ी नन्हीं-सी, रंग-बिरंगी कठपुतली को देखकर बच्चे जोश में आ जाते हैं और वे उसका नाम पुकारने लगते हैं। फिर मैं बच्चों से प्रासंगिक सवाल पूछता हूँ। जैसे, मान लीजिए कि यह फिंगर पपेट लोमड़ी है, तब सवाल ये हो सकता है : कहानी में इस किरदार का नाम क्या है? इस किरदार ने क्या कहा था? और ऐसा कहने के बाद क्या हुआ था?

मैं मुस्कराते हुए या गर्दन हिलाते हुए बच्चों के जवाब सुनता हूँ या उनसे एक और सवाल पूछता हूँ ताकि वे और बात कर सकें। इसके बाद मैं वह फिंगर पपेट बच्चों को देता हूँ। मैं इस बात का ध्यान रखता हूँ कि सभी बच्चों को उस पपेट को अपनी उँगली पर चढ़ाने का मौक़ा मिले। जब बच्चे पहली बार इन पपेट्स को अपनी उँगली पर पहनते हैं तो खुशी से हँसते-खिलखिलाते हैं। इससे उनका जोश भी बढ़ता है और



चित्र-1 : अपनी फिंगर पपेट्स के साथ खेलते बच्चे।

अगली पपेट और सवाल के लिए उनकी उत्सुकता बनी रहती है। फिंगर पपेट्स और सवालों के साथ कहानी के अन्त तक यह प्रक्रिया चलती है। सीखने का इस तरह से सुदृढ़ीकरण करने से शिक्षक को भी यह समझने में मदद मिलती है कि बच्चों को कहानी कहाँ तक समझ में आई है। इस जानकारी के आधार पर या तो वे कहानी को दोबारा सुना सकते हैं या अगली कहानी पर जा सकते हैं।

### बच्चों के लिए लाभ

शुरुआती सालों में बच्चे किसी भी गतिविधि में प्रायः ज्यादा देर तक संलग्न नहीं रहते। फिंगर पपेट्स जैसी टीएलएम सामग्री से बच्चों को लम्बे समय तक किसी गतिविधि में लगाए रखने में मदद मिलती है। फिंगर पपेट्स की मदद से सीखने को सुदृढ़ करने और जब बच्चे आनन्दमय हों तब विचारोत्तेजक सवाल पूछने से बच्चों को उस कहानी को याद करने में मदद मिलती है जिसे वे सुन (और सीख) चुके हैं और वे जवाब देने को तत्पर रहते हैं। इसके अलावा, बच्चों की प्रतिक्रियाओं पर शिक्षक की हामी मिलने से बच्चों को और भी खुशी मिलती है और वे उस गतिविधि में और अधिक दिलचस्पी दिखाते हैं। सुदृढ़ीकरण की इस पद्धति से उन्हें बारीक विवरणों के बारे में सोचने का भी मौका मिलता है। साथ ही उनकी मौखिक भाषा का विकास भी होता है : वे क्रमबद्ध ढंग से वाक्य बोलने लगते हैं जिससे उनकी संज्ञानात्मक क्षमताएँ बेहतर होती हैं।

### नाटक कोना

फिंगर पपेट वाली गतिविधि खत्म होने के बाद उन्हें नाटक कोने में रख दिया जाता है ताकि खाली समय में बच्चे उनसे फिर खेल सकें। फिंगर पपेट छोटी-छोटी, रंग-बिरंगी होती हैं जिन्हें बच्चे आसानी से उठा सकते हैं, उँगली पर पहन सकते हैं। इसी कारण फिंगर पपेट्स बच्चों को लुभाती हैं और उँगलियों पर पहनकर वे इन कठपुतलियों को पात्र बनाते हुए अपने तरह

से कहानी कहते हैं। इस तरह, फिंगर पपेट्स की मदद से बच्चे खाली समय में कहानी के बारे में अपनी समझ को और पुष्टा करते हैं।

शिक्षक फिंगर पपेट्स का इस्तेमाल ऐसी कहानियों के लिए भी कर सकते हैं जिनमें बहुत सारे पात्र हों या किसी खास विषय आधारित हों। मिसाल के तौर पर, (वास्तविक सच्चियों के साथ) सच्चियों के बारे में सुनियोजित बातचीत के बाद शिक्षक सच्चियों की फिंगर पपेट्स का उपयोग कर सकते हैं और सच्चियों पर उनके सबक को सुदृढ़ करने के लिए इस तरह के सवाल पूछ सकते हैं : इस सच्चि का नाम क्या है? इसका क्या रंग है? इसको कैसे खाया/ पकाया जाता है? छूने पर ये कैसी लगती है? (चिकनी, सख्त, रसीली वगैरह)।

### रनिंग ब्लैकबोर्ड का इस्तेमाल

रनिंग ब्लैकबोर्ड (आरबीबी) का इस्तेमाल आँगनवाड़ियों (या प्रीस्कूल) में किया जाता है। इसमें कक्षा की दीवार को फर्श से एक मीटर ऊँचाई तक काले रंग में रंगा जाता है। आमतौर पर किसी सुनियोजित बातचीत के बाद या कहानी सुनने-सुनाने के बाद बच्चे चॉक से इस रनिंग ब्लैकबोर्ड पर अपने विचार/ अनुभवों को उकेरते हैं। बच्चों को तो इस मुक्त चित्रकारी में मजा आता ही है, रनिंग ब्लैकबोर्ड से शिक्षक को भी बच्चों को किसी खास विषय/ अवधारणा को सुदृढ़ करने में मदद मिलती है।

### उदाहरण-1

‘मेरा परिवार’ शीर्षक पर एक सुनियोजित बातचीत खत्म करने के बाद मैंने बच्चों को मौका दिया कि जो चर्चा उन्होंने अभी की, उसे वे रनिंग ब्लैकबोर्ड पर उकेर दें। रनिंग ब्लैकबोर्ड के पास बैठे बच्चे खड़े हुए और बोर्ड पर चित्रकारी करने लगे। मैंने हरेक बच्चे के पास जाकर बात की और पूछा कि उसने क्या बनाया है।



चित्र-2 : रनिंग ब्लैकबोर्ड पर चित्रकारी करती बच्ची।

एक बच्ची ने गोल घेरे जैसी आकृति बनाई थी (चित्र-2)।  
उससे ये बातचीत हुई :

मैं (उसके बनाए चित्र की तरफ इशारा करते हुए) : ये क्या है?

बच्ची : ये हमारा घर है।

मैं : इस घर में कौन-कौन रहता है?

बच्ची : मैं, मम्मी, पापा और अक्का (दीदी)।

मैं : अरे वाह! अच्छा, ये क्या है? (बगल में बनी दूसरी लकीरों की तरफ इशारा करते हुए मैंने पूछा)।

बच्ची : ये हमारी भैंस और बकरियाँ हैं। दादाजी रोज भैंस का दूध निकालते हैं। मुझे दूध बहुत अच्छा लगता है।

मैं : ये तो बहुत अच्छी बात है। बकरियाँ क्या करती हैं? क्या वे भी दूध देती हैं?

बच्ची : हाँ, देती हैं। पर हम बकरियों का दूध नहीं पीते। उनके बच्चे ही पीते हैं।

मैं (घर वाले घेरे के पास बने एक बिन्दु की तरफ इशारा करते हुए) : ये क्या है?

बच्ची : ये हमारी नई बाइक है।

मैं : इसको कौन चलाता है?

बच्ची : पापा जब अपनी कम्पनी जाते हैं (ड्यूटी करने) तो बाइक पर जाते हैं। कल दीदी और पापा बाइक पर बैठकर एक दावत में गए थे।

मैं : अच्छा, तुमने तो अपने परिवार का बहुत अच्छा चित्र बनाया है।

इसके बाद मैं दूसरे बच्चे से इसी तरह की बातचीत करने लगा।

### उदाहरण-2

एक अन्य मौक़े पर कहानी सुनाने के बाद रनिंग ब्लैकबोर्ड पर कुछ बनाते हुए एक अन्य बच्ची के साथ भी इसी तरह की सुदृढ़ बातचीत हुई जो इस तरह है :

मैं (बच्ची की चित्रकारी की तरफ इशारा करते हुए) : ये क्या है?

बच्ची : ये गेंद है! ये अपना नाम भूल गई है इसलिए दरवाज़े के पास जाकर उससे अपना नाम पूछ रही है।

मैं : अच्छा, तो फिर क्या हुआ? क्या दरवाज़े ने उसका नाम बता दिया?

बच्ची : नहीं। दरवाज़े ने उसका नाम नहीं बताया, उसे नहीं पता था। अब वह यहाँ झाड़ू से अपना नाम पूछने आई है।

(ऐसा कहते हुए वह अपने दूसरे चित्र की तरफ इशारा करती है)।

मैं : अच्छा! फिर क्या होता है?

बच्ची : झाड़ू भी यही कहती है कि उसे गेंद का नाम नहीं पता।

मैं : बुरा हुआ। इसके बाद गेंद ने क्या किया?

बच्ची : फिर गेंद बल्ले के पास गई। (उसने बल्ले के लिए एक लकीर खींची हुई थी, इस ओर इशारा करते हुए बताया)। बल्ले के पास जाकर उसने अपना नाम पूछा।

मैं : ओके, क्या बल्ले ने गेंद को उसका नाम बता दिया?

बच्ची (चहकते हुए) : हाँ! बल्ले ने कहा कि 'तुम्हारा नाम गेंद है और मेरा नाम बल्ला है। हम दोनों दोस्त हैं।'

मैं : शाबाश! तुमने बहुत अच्छे से गेंद की कहानी का चित्र बनाया और उसे सुनाया।

### बच्चों के लिए फ़ायदा

बच्चे अपने विचारों और अनुभवों को अपने ढंग से खुलकर व्यक्त करने के लिए रनिंग ब्लैकबोर्ड का इस्तेमाल करते हैं। कुछ बच्चे गोदा-गादी करते हैं तो कुछ चित्र बनाने की कोशिश करते हैं। जब उनकी बनाई चित्रकारी पर चर्चा होती है तो बच्चों को खुद अपने चित्र को पिछली बातचीत के साथ जोड़कर देखने और उसके बारे में बात करने का प्रोत्साहन मिलता है। इस प्रक्रिया में बच्चों को सोचने और ये बताने का मौक़ा मिलता है कि उन्होंने क्या सीखा है। रनिंग ब्लैकबोर्ड उन सबसे प्रभावी तरीकों में से एक तरीका है जिसका शिक्षक बच्चों के सीखने को सुदृढ़ करने के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं। कुछ बच्चों को बोलने में झिझक महसूस होती है, उन्हें बड़े समूह के सामने अपने विचार व्यक्त करने या शिक्षक की बात का जवाब देने में झिझक महसूस होती है। मगर रनिंग ब्लैकबोर्ड का इस्तेमाल करते हुए सिर्फ़ उनके साथ बातचीत होती है, इससे उन्हें उनकी चित्रकारी के बारे में शिक्षक के सवालियों का जवाब देने में सहज महसूस कर सकते हैं।

बच्चे की प्रतिक्रियाओं पर शिक्षक की सराहना से उन्हें अपनी अहमियत का एहसास होता है और उनका आत्मविश्वास बढ़ता है और उनकी चित्रकारी बेहतर होती है। इससे शिक्षक के प्रति उनका विश्वास भी गहरा होता है, यह विश्वास शिक्षक को बच्चों को धीरे-धीरे बड़े समूह से जोड़ने और बोलने के लिए प्रोत्साहित करने में मदद करता है – बड़े समूह से जुड़ना और उसमें बोलना एक ज़रूरी सामाजिक कौशल है।

रनिंग ब्लैकबोर्ड के इस्तेमाल से बच्चों को लेखन, चित्रकारी या गोदा-गादी के साधन चॉक की पकड़ सम्बन्धी सूक्ष्म मोटर

स्किल्स को मजबूत करने में भी मदद मिलती है। और इस तरह बच्चे पेन-पेंसिल को भली-भाँति पकड़कर लिखने में मदद मिलती है।

## निष्कर्ष

सीखने के स्तर पर बच्चा कहाँ है, इसे समझना और सुदृढ़ीकरण के ज़रिए अब तक की सीख को पुष्ट करना बहुत ज़रूरी है। बच्चों की लर्निंग को सुदृढ़ करने के लिए फिंगर पपेट और रनिंग ब्लैकबोर्ड, इन दोनों साधनों को शिक्षक आजमा और

अपना सकते हैं। फिंगर पपेट्स से बच्चों को न केवल यह याद करने और विचारने में मदद मिलती है कि उन्होंने पपेट के साथ क्या सीखा था बल्कि इससे उनमें उत्साह भी पैदा होता है। जबकि रनिंग ब्लैकबोर्ड के इस्तेमाल से बच्चों को खुलकर बोलने में मदद मिलती है क्योंकि उन्होंने अपने विचारों को रनिंग ब्लैकबोर्ड पर उकेरा होता है जो बिनी किसी तनाव के उनके हाथ की हरकत को शुरू करता है। इस तरह शिक्षक के लिए, बच्चों को गतिविधियों में लगाए रखना और उनके सीखने को सुदृढ़ करना आसान होता है।



साई प्रवीण मदीरला वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन तेलंगाना के संगारेड्डी ज़िला संस्थान में प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा (ईसीई) के स्रोत व्यक्ति के रूप में कार्यरत हैं। उन्होंने अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की है। उनकी रुचि ईसीई के क्षेत्र में ज़मीनी स्तर पर काम करने में है ताकि शिक्षकों के अध्यापन और बच्चों के विकास में स्थाई और टिकाउ परिवर्तन ला सकें। उन्हें प्रकृति से जुड़ी जगहों पर यात्राएँ करना अच्छा लगता है। उनसे [maddirala.praveen@azimpremjifoundation.org](mailto:maddirala.praveen@azimpremjifoundation.org) पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : योगेन्द्र दत्त पुनरीक्षण : प्रतिका गुप्ता कॉपी एडिटर : अनुज उपाध्याय